A National, Registered & Refereed Monthly Journal : Research Paper
Research Link - 173, Vol - XVII (6), August - 2018, Page No. 84-86
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782
Since March 2002

पालक-पाल्य सम्बंध (मातृ एवं पितृ सम्बंध) का किशोर विद्यार्थियों के मूल्य पर प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में पालक-पाल्य सम्बंध (मातृ एवं पितृ सम्बंध) का किशोर के मूल्य पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु दुर्ग एवं राजनांदगांव जिले के कक्षा ग्यारहवीं के किशोरों को लिया गया है। उद्देशीय यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के आधार पर 800 किशोरों को लिया गया है। पालक-पाल्य सम्बंध मापने के लिए डॉ.नलिनी राव द्वारा निर्मित पालक-पाल्य सम्बंध मापनी और मूल्य का मापन करने के लिए जे.पी.शेरी एवं आर.पी.वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु t परीक्षण किया गया है। परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मातृ सम्बंध एवं पितृ सम्बंध किशोरों के मूल्य के आयामों के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है। कुँजी शब्द : पालक-पाल्य सम्बंध, मूल्य, किशोर विद्यार्थी।

डॉ.सुमित्रा मौर्य

प्रस्तावना :

परिवार एक सार्वभौमिक, स्वाभाविक तथा सबसे प्राचीनतम संस्था है। मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार द्वारा ही होती है। परिवार ही एकमात्र ऐसी संस्था है, जो बच्चों को समाज के नियमों से परिचित कराती है, उनमें मानवीय गुणों का विकास करती है। परिवार में माता–पिता और बच्चों में जो सम्बंध होते हैं, उन्हें पारिवारिक सम्बंध कहते हैं। इन सम्बंधों में माता–पिता के सम्बंध, भाई–बहिनों के सम्बंध और माता तथा पिता के अलग–अलग बेटे–बेटियों के सम्बंधों का अध्ययन किया गया है। पालक–पाल्य सम्बंध भी पारिवारिक सम्बंधों का एक भाग है पालक–पाल्य सम्बंध में मुख्य रूप से माँ और बेटे–बेटियों के सम्बंध तथा पिता और बेटे बेटियों के सम्बंधों का अध्ययन किया गया है।

अग्रवाल (1997) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि बच्चों का व्यवहार का ढंग एवं समायोजन की योग्यता भी उनके माता–पिता से सम्बंधों पर निर्भर करती है। जैन (1989) ने अपने अध्ययन में पाया कि माता–पिता का व्यवहार बच्चों में उनकी स्वयं की छवि बनाने में तथा स्वयं के बारे में दृष्टिकोण बनाने में मदद करता है। कक्कड़ (1994) ने अपने अध्ययन में इस तथ्य की पुष्टि की है।

राजा मॅक्गी, स्टानटर (1992) ने अपने अध्ययन में देखा कि पालकों का अपने बच्चों से अच्छे सम्बंध मनोवैज्ञानिक समृद्धि के लिए जरूरी हैं। क्रोस्नो, एलडर (2004) एवं डसी (1994) एवं लौरिन्स (2012) अभिभावक से अच्छे सम्बंध होने पर बालक विद्यालय वातावरण में अच्छे अनुभव एवं समायोजन प्राप्त करते हैं। वीह्जलसन (1994) ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों के आंतरिक स्वास्थ्य के लिए अच्छे पालक–पाल्य सम्बंध आवश्यक है।

कौशिक एवं रानी (2005) ने अपने एक अध्ययन में देखा कि बच्चों के जीवन में उसके माता–पिता से सम्बंध तथा घर के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। घर पर यदि माता–पिता नैतिक आचरण करते हैं, तो बालक भी नैतिकता का प्रदर्शन करेगा। ज्योति (1993) ने एक अध्ययन में पाया कि परिवार के प्रकार एवं नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। जोशी (2007) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि माता–पिता की लालन–पालन पद्धति का किशोरों के मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है। हाफमैंन (1982) ने अध्ययन किया और पाया कि माता–पिता बच्चों के नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पराग एवं शर्मा (2000) ने प्राप्त किया कि सामाजिक ज्ञानात्मक, आर्थिक एवं शक्ति मूल्य का सम्बंध उनके परिवारिक पृष्ठभूमि से पाया गया। माता–पिता के रहन–सहन, विचारों, आदर्शों, मान्यता का प्रभाव बालक पर पड़ता है। माता–पिता की मूल्य पद्धति का बालक अनुसरण करता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

(1) पालक–पाल्य सम्बंध (मातृ संबद्ध एवं पितृ संबद्ध) का किशोर विधार्थियों के मूल्य के विभिन्न आयामों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

H 01 : पालक–पाल्य सम्बंध का किशोर विधार्थियों के मूल्य के आयामों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत अध्ययन में दुर्ग जिले के कुल 304 विद्यालय में से 164 विद्यालय ग्रामीण एवं 140 विद्यालय शहरी क्षेत्र में तथा राजनांदगाँव

सहायक प्राध्यापक, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

जिले के कुल 127 विद्यालय में से 72 विद्यालय ग्रामीण एवं 55 विद्यालय शहरी क्षेत्र में स्थित है। दुर्ग एवं राजनांदगाँव जिले के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की कुल संख्या 80692 है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध में 11वीं कक्षा में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। इस प्रकार उद्देशीय यादृछिक न्यादर्शन विधि से प्रतिदर्श का चयन किया गया है। दुर्ग जिले के सात विकाखण्ड में से तीन विकासखण्ड एवं राजनांदगाँव जिले के नौ विकासखण्ड में से तीन विकासखण्ड का चयन न्यादर्श चयन हेतु किया गया है। विद्यालयों में 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है, जिनमें से 10 ग्रामीण क्षेत्र एवं 10 शहरी क्षेत्र के विद्यालय के 400 छात्र एवं 400 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। इस प्रकार कुल 800 न्यादर्श का चयन अध्ययन हेतु किया गया है।

शोध अभिकल्प :

स्वतंत्र चर	आश्रित चर
पालक पाल्य सम्बंध	मूल्य
मातृ सम्बंध	मूल्य के आयाम
पितृ सम्बंध	

उपकरण :

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में चरों के मापन के लिए पालक–पाल्य सम्बंध मापनी– डॉ. नलिनी राव (1971), Revised (2001) (Parent Child Relationship Scale) (PCRS)] व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली – जी.पी. शेरी एवं आर. पी. वर्मा (1971), Revised (2000) (Personal Values Questionnaire) (PVQ) का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण :

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण, मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दो समूहों के मध्य प्राप्त होने वाले अंतर का आंकलन t-मूल्य के रूप में किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

H 01 : पालक–पाल्य सम्बंध का किशोर विधार्थियों के मूल्य के आयामों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि मातृ संबद्ध किशोरों के मध्यमान पितृ सम्बंध किशोरों के मध्यमान से अधिक है। मातृ सम्बंध किशोरों का मध्यमान धार्मिक मूल्य 60.51, सामाजिक मूल्य 59.94, प्रजातांत्रिक मूल्य 54.30, आर्थिक मूल्य 58.34, ज्ञानात्मक मूल्य 59.84, शक्ति मूल्य 59.37, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य 55.37, स्वास्थ्य मूल्य 56.95, पितृ सम्बंध किशोरों का मध्यमान क्रमशः 55. 25, 49.63, 48.86, 49.14, 52.37, 49.31, 44.41, 49.38 से अधिक पाया गया।

इनके लिए t का मान क्रमशः धार्मिक मूल्य 7.60 ($P < .01$), सामाजिक मूल्य 16.20 ($P < .01$), प्रजातांत्रिक मूल्य 6.58 ($P < .01$), आर्थिक मूल्य 11.88 ($P < .01$), ज्ञानात्मक मूल्य 10.12 ($P < .01$), शक्ति मूल्य 12.49 ($P < .01$), पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य 17.37 ($P < .01$), स्वास्थ्य मूल्य 10.30 ($P < .01$) पाया गया।

मातृ सम्बंध किशोरों के कुल मूल्य का मध्यमान 566.82, पितृ सम्बंध किशोरों के माध्यमान 501.4 से अधिक पाया गया। जिसके लिए t का मूल्य 28.35 ($P < .01$) प्राप्त हुआ अर्थात् मातृ सम्बंध किशोरों के मूल्य एवं पितृ सम्बंध किशोरों के मूल्य के मध्य उपरोक्त आयामों एवं कुल मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया, जबकि मूल्य के अन्य आयामों सौन्दर्यात्मक एवं सुखात्मक मूल्य में मातृ एवं पितृ सम्बंध किशोरों के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मेरटु एवं बेंनहार्ट (1975) ने अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि माता संवेगात्मक सहारा, अंर्तव्यक्तिगत संवेदनशीलता एवं सहायता देने वाली होती है।

अतः परिकल्पना H01 पालक–पाल्य सम्बंध का किशोर विधार्थियों के मूल्य के आयामों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा। मूल्य के आयाम सौन्दर्यात्मक एवं सुखात्मक मूल्य को छोड़कर शेष सभी आयामों के लिए उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिणाम :

(1) मातृ सम्बंध एवं पितृ सम्बंध किशोरों के मूल्य के आयामों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

(2) मातृ सम्बंध किशोरों के मूल्य पितृ सम्बंध किशोरों से अधिक पाए गए।

(3) मातृ सम्बंध एवं पितृ सम्बंध किशोरों में सौन्दर्यात्मक एवं सुखात्मक मूल्य में कोई अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 1 : किशोर विधार्थियों के मूल्य के आयामों पर मातृ संबद्ध एवं पितृ संबद्ध के आधार पर भिन्नता

मूल्य के आयाम	मातृ संबद्ध			पितृ संबद्ध			t
	N	M	SD	N	M	SD	Value
धार्मिक मूल्य	423	60.51	10.26	390	55.25	09.46	07.60*
सामाजिक मूल्य	423	59.94	11.93	390	49.63	10.82	16.20*
प्रजातांत्रिक मूल्य	423	54.30	13.76	390	48.86	09.57	06.58*
सौंदर्यात्मक मूल्य	423	52.68	10.79	390	52.87	10.88	00.26•
आर्थिक मूल्य	423	58.34	13.47	390	49.14	08.14	11.88*
ज्ञानात्मक मूल्य	423	59.84	10.87	390	52.37	10.13	10.12*
सुखात्मक मूल्य	423	49.48	08.66	390	50.17	08.36	01.15•
शक्ति मूल्य	423	59.37	13.60	390	49.31	09.09	12.49*
पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	423	55.37	13.80	390	44.41	08.39	17.37*
स्वास्थ्य मूल्य	423	56.95	11.25	390	49.38	09.66	10.30*
कुल मूल्य	**423**	**566.82**	**45.70**	**390**	**501.40**	**12.25**	28.35*

*.01 स्तर पर सार्थकता, NS Not Significant, N = 813, df = 811

व्याख्या :

मूल्य के आयामों पर मातृ एवं पितृ सम्बंध में भिन्नता सार्थक रूप से परिलक्षित होने एवं मातृ सम्बंध अधिक पाये जाने का कारण स्वभाविक रूप से किसी भी बच्चे का माता से जन्मजात प्रगाढ़ सम्बंध होने को ही माना जा सकता है, परंतु सुखात्मक एवं सौन्दर्यात्मक आयामों में मातृ पितृ संबद्ध का प्रभाव नहीं दिखाई देने का अर्थ यह हो सकता है कि सौन्दर्य एवं सुख व्यक्ति के स्वयं के दृष्टिकोण है। इनका शिक्षा एवं अनुभव के द्वारा परिमार्जन भी संभव है।

संदर्भ :

(1) *Agarwal, Kusum (1997) : A comparative study of parental encouragement among the different educational groups of Urban and Rural adolescents.Expriments in Education.25(10),204-207.refared from Indian*

(2) *Crosnoe, R. and Elder, G.H. (2004) : Family dynamics, supportive relationships and educational resilience during adolescence. Journal of family issues, 25, 571-602.*

(3) *Dacey, J. and Kenny, N. (1994) : Adolescent Development. Madison, UK :Braun and Benchmark.*

(4) *Hoffman (1982) : Children and Moral Development. Child Development. 34 (2), 295-318. refared from Praachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions, 2004, 20(1), 64.*

(5) *Journal of Psychometry and Education, July, 2005, 36(2), 146-152.*

(6) *Jain, Neera (1989) : Family structure, parental behviour and self exteem in male and female adolescents.Ph.D. Psychology, University of Lucknow. refared from Indian Journal of Psychometry and Education, July, 2005, 36(2), 146-152.*

(7) *Kakkar, A. (1994) : A study of parental acceptance rejection as related to the problems of adolescents. Six Survey of Education, 1993-2000, II, 306.*

(8) *Kaushik, Nirmala, Rani ,Sunita (2005) : A comparative study of achievement motivation, home environment and parent child relationship of adolescents. Journal of Psychological Researches, August, 49(2), 83-84.*

(9) *Lieurance, Safire (2012) : A parent's influence on their children's personality. cited in voices, yahoo.com.*

(10) *Parang, Pooja and Sharma, Anuradha (2000) : Relationship of family background with value system of students. Praachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions, October, 16, (2), 115-120.*

(11) *Raja, S.N., McGec, R. and Stantor, W.R. (1992) : Perceived attachments to parents and peers and psychological well being during. Journal of youth and adolescence, 25, 471-485.*

(12) *Vihjalmsson, R. (1994) : Effect of social support on self assessed health in adolescence. Journal of youth and adolescence, 23, 437-452.*

❁❁

A National, Registered & Refereed Monthly Journal : Research Paper
Research Link - 173, Vol - XVII (6), August - 2018, Page No. 87-89
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782
Since March 2002

किशोर छात्र-छात्राओं की समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में किशोर छात्र-छात्राओं की समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रुप में 40 विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्वक यादृच्छिक विधि से चुना गया है। चयनित विद्यार्थियों से आंकड़ों का संग्रह करने के लिए आशीष वाजपेयी, हरगोविंद शुक्ला एवं अमित गुप्ता द्वारा निर्मित किशोर समस्या मापनी का उपयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 'टी' मूल्य की गणना की गई है। परिणाम किशोर छात्र-छात्राओं की समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया।

डॉ.मनोज कुमार मौर्य

प्रस्तावना :

मनोविज्ञान, मानव व्यवहार का अध्ययन करता है, जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को अनेक अवस्थाओं तथा परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। इन अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों तथा परिस्थितियों का प्रभाव मानव के व्यवहार पर पड़ता है। विकास की यात्रा के दौरान मुख्य पड़ाव है, किशोरावस्था। इस अवस्था में व्यक्ति शैशव तथा बाल्यावस्था की सीढ़ियाँ पार करता है। शैशव अवस्था में बालकों की मूल प्रवृत्तियों में संशोधन होना आरंभ हो जाता है। बाल्यावस्था में उसमें सामाजिकता का विकास होने लगता है। वैयक्तिक भिन्नता प्रकट होने लगती है। किशोरावस्था विकास की सबसे जटिल अवस्था मानी जाती है। इस अवस्था में किशोर व किशोरियों में नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं।

वास्तव में किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन और समस्यात्मक काल होता है। इस अवस्था में किशोर व किशोरियाँ एक तूफानी दौर से गुजरते हैं। अतः उन्हें अनेक मानसिक यातनायें, दबाव तनाव सहन करने पड़ते हैं। तीव्र शारीरिक परिवर्तन के कारण इस काल में किशोर व किशोरियों के मानसिक जीवन में भयंकर उथल–पुथल होती है। वे समाज के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं, उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किशोर इन समस्याओं का सामना कर लेता है या उसे पर्याप्त प्रेम सहानुभूति का वातावरण मिलता है, तो उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का संतुलित विकास हो पाता है।

सम्बंधित शोध अध्ययन :

(1) चक्रवर्ती एवं श्रीवास्तव (2002) ने किशोरों के व्यवहार संबंधी समस्या का अध्ययन किया और परिणाम प्राप्त किया कि ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की समस्या में संवेगात्मक समायोजन, दुश्चिंता स्तर और आक्रामक व्यवहार के क्षेत्र में सार्थक अंतर पाया गया।

(2) माथुर एवं पारिक (2003) ने किशोर का समस्यात्मक व्यवहार विषय पर अध्ययन किया और परिणाम पाया कि पालकों का बच्चों के साथ अंतःक्रिया के तरीके का योगदान किशोर समस्या पर पड़ता है।

(3) श्याम एवं प्रमिला (2001) ने युवा के लिंगभेद का गुस्से के भाव एवं आत्म–संप्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन किया परिणाम पाया कि लड़के अधिक गुस्से वाले पाए गए।

उद्देश्य :

(1) किशोर छात्र–छात्राओं की समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

(3) किशोर छात्र–छात्राओं की सामाजिक समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

(4) किशोर छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

परिकल्पना **H01 :** किशोर छात्र–छात्राओं की समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना **H02 :** किशोर छात्र–छात्राओं की किशोर समस्या के आयामों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

उप–परिकल्पना **H02.1 :** किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

उप–परिकल्पना परिकल्पना **H02.2 :** किशोर छात्र–छात्राओं

सहायक प्राध्यापक, स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय, हुडको, भिलाई (छत्तीसगढ़)

की सामाजिक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

उप–परिकल्पना **H02.03 :** किशोर छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

शोध प्रविधि :

जनसंख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन में दुर्ग जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सुपेला एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रिसाली के कक्षा ग्यारहवी में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के अंतर्गत शामिल किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कक्षा ग्यारहवी में अध्ययनरत् 40 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श के आधार पर चयनित किया गया है, जिसमें 20 लड़के एवं 20 लड़कियों को चुना गया है।

शोध अभिकल्प :

स्वतंत्र चर :

किशोर समस्या :

(1) संवेगात्मक समस्या (2) सामाजिक समस्या

(3) व्यावसायिक समस्या

जननांकिकीय चर :

लिंग :

(1) लड़के (2) लड़कियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में स्वतंत्र चर किशोर समस्या है।

उपकरण :

किशोर समस्या मापनी :

प्रस्तुत शोध कार्य में किशोर समस्या का मापन करने के लिए आशीष बाजपेयी, हरगोविन्द शुक्ला एवं अमित गुप्ता द्वारा निर्मित किशोर समस्या मापनी का उपयोग किया गया है। इस मापनी में 3 आयाम संवेगात्मक समस्या सामाजिक समस्या एवं व्यावसयिक समस्या है। मापनी में कुल 60 प्रश्न हैं। यह मापनी 2 बिन्दु मापनी पर आधारित है। प्रश्नावली की विश्वसनीयता गुणांक परीक्षण पुनः परीक्षण (Test-Retest Method) विधि से ज्ञात किया गया, जिसमें विश्वसनीयता गुणांक .82 पाया गया। तथा तर्कयुक्त समानता विधि (Rational Equivalance Method) द्वारा विश्वसनीयता गुणांक .79 पाया गया। वैधता .86 और .78 पाया गया, जो उच्च विश्वसनीयता एवं वैधता को दर्शाती है।

सांख्यिकीय गणना :

प्रस्तुत शोध में किशोर समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु टी–परीक्षण (t-test) का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

सारणी क्रमांक 1.0 : किशोर समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग के प्रभाव का टी मूल्य

लिंग	N	M	SD	t
लड़के	20	12	4.02	2.75
लड़कियाँ	20	15.5	2.87	
df = 38, P < .01 सार्थक				

परिकल्पना H01 : किशोर छात्र–छात्राओं की समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

प्रस्तुत सारणी 1.0 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि लड़कों की किशोर समस्या का मध्यमान 12 लड़कियों की किशोर समस्या का मध्यमान 15.5 प्राप्त हुआ। टी–मूल्य 2.75 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः किशोर छात्र–छात्राओं की समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। मध्यमान का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लड़कियों की किशोर समस्या लड़कों की तुलना में अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H02 : किशोर छात्र–छात्राओं की किशोर समस्या के आयामों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

उप–परिकल्पना H02.1 : किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 2.0 : किशोर समस्या के आयाम संवेगात्मक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग के प्रभाव का टी मूल्य

लिंग	N	M	SD	t
लड़के	20	2.9	1.71	11.94
लड़कियाँ	20	9.05	1.6	
df = 38, P < .01 सार्थक				

प्रस्तुत सारणी 2.0 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि लड़कों की संवेगात्मक समस्या का मध्यमान 2.9 तथा लड़कियों की संवेगात्मक समस्या का मध्यमान 9.05 है, टी–मूल्य 11.94 प्राप्त हुआ, जो .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि लड़कियों की संवेगात्मक समस्या लड़कों की तुलना में अधिक है। अर्थात् किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

उप–परिकल्पना H02.2 : किशोर छात्र–छात्राओं की सामाजिक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 3.0 : किशोर समस्या के आयाम सामाजिक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग के प्रभाव का टी मूल्य

लिंग	N	M	SD	t
लड़के	20	4.1	2.02	1.60
लड़कियाँ	20	3.2	1.56	
df = 38, NS सार्थक नहीं				

प्रस्तुत सारणी 3.0 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि लड़कों की सामाजिक समस्या का मध्यमान 4.1 तथा लड़कियों की सामाजिक समस्या का मध्यमान 3.2 प्राप्त हुआ। टी–मूल्य 1.60 प्राप्त हुआ। जो सार्थक नहीं पाया गया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि लड़के एवं लड़कियों की सामाजिक समस्या में कोई अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

उप–परिकल्पना H02.3 : किशोर छात्र–छात्राओं की

व्यावसायिक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 4.0 : किशोर समस्या के आयाम व्यावसायिक समस्या के प्राप्तांकों पर लिंग के प्रभाव का टी मूल्य

लिंग	N	M	SD	t
लड़के	20	5.7	1.86	4.5
लड़कियाँ	20	3.45	1.35	
df = 38, P < .01 सार्थक				

प्रस्तुत सारणी 4.0 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि लड़कों की व्यावसायिक समस्या का मध्यमान 5.7 तथा लड़कियों की व्यावसयिक समस्या का मध्यमान 3.45 प्राप्त हुआ। टी–मूल्य 4.5 प्राप्त हुआ, जो .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि लड़कों की व्यावसायिक समस्या, लड़कियों की व्यावसायिक समस्या की तुलना में अधिक पाई गई अर्थात् किशोर छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक समस्या पर लिंग का प्रभाव पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

व्याख्या :

प्रस्तुत शोध कार्य में किशोर विद्यार्थियों की समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया गया। लड़कों की तुलना में लड़कियों में किशोर समस्या अधिक पायी गई। इसका कारण यह हो सकता है कि समाज में लड़कियों को अधिक स्वतंत्रता नहीं दिया जाना लड़कियों का अधिक संकोचशील प्रवृत्ति का होना है, जिसके कारण वे अपनी समस्या दूसरों को नहीं बताती है।

लड़कियों में संवेगात्मक समस्या अधिक पाये जाने का कारण यह हो सकता है कि उन्हें समाज के साथ अंतःक्रिया करने का कम अवसर मिलता है। लड़कों में व्यावसायिक समस्या अधिक पाये जाने का कारण यह हो सकता है कि वे भविष्य के अपने किये जाने वाले व्यवसाय को लेकर अधिक समस्या ग्रस्त एवं चिंताग्रस्त रहते हैं।

परिणाम :

(1) किशोर छात्र–छात्राओं की समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। लड़कों की तुलना में लड़कियों में किशोर समस्या अधिक पायी गई।

(2) किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। लड़कों की तुलना में लड़कियों में संवेगात्मक समस्या अधिक पायी गई।

(3) किशोर छात्र–छात्राओं की सामाजिक समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। लड़कें एवं लड़कियों की सामाजिक समस्या में कोई अंतर नहीं पाया गया।

(4) किशोर छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक समस्या पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। लड़कियों की तुलना में लड़कों की व्यावसायिक समस्या अधिक पायी गई।

निष्कर्ष :

किशोर छात्र–छात्राओं की समस्या पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया गया, जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि लड़कियों में अधिक समस्या पाई गई। लड़कियों में संवेगात्मक समस्या एवं लड़कों में व्यावसायिक समस्या अधिक पायी गई।

सुझाव :

(1) किशोरों के व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श के लिए विद्यालय में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

(2) लड़कियों को विद्यालयीन पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।

(3) किशोरों को घर एवं विद्यालय में उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य दिये जाने चाहिए। जिससे उनमें संवेगात्मक परिपक्वता विकसित होगी।

(4) विद्यालय एवं घर का वातावरण प्रेम सहानुभूतिपूर्ण हो।

संदर्भ :

(1) चक्रवर्ती, विजय एवं श्रीवास्तव रजनी (2002) : किशोर के व्यवहार संबंधी समस्या पर अध्ययन, प्राची जनरल ऑफ साइकोकल्चरल डाइमेंसन, वाल्यूम 18 (2), 131–134.

(2) माथुर, मधु एवं पारिक, कुसुम (2003) : किशोर का समस्यात्मक व्यवहार, इंडियन जरनल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजुकेशन, वाल्यूम 34 (2) 59–66.

(3) पाठक, पी.डी. (2009) : शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पाब्लिकेशन्स, अड़तीसवाँ संस्करण, 22.

(4) शर्मा, गंगाराम भार्गव, विवेक शर्मा, विवेक (2006) : शिक्षा मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, द्वितीय संस्करण, 55–58.

(5) श्याम राधे एवं प्रमिला (2001) : गुस्से का भाव में लिंग भेद एवं आत्म संप्रत्यय युवा के संदर्भ में प्राची जनरल ऑफ साइको कल्चरल डाइमेंशन वाल्यूम 17, (1) 61–64.

❁❁